विषयसूची

प्राचीन भारतीय भाषाओं का प्रवाहक्रम, १–४, शौरसेनी और पैशाची (भूतभाषा), ४–६, अपभ्रंश, ६–१४ [अपभ्रंश और पुरानी हिंदी का काल-निर्णय; अपभ्रंश की सर्वमान्यता; राजशेखर का मत; अपभ्रंश और पुरानी हिंदी का स्थूल भेद; 'पुरानी हिंदी' नामकरण का कारण; पुरानी हिंदी की रचनाएँ; दोहाविद्या; हेमचंद्र के 'प्राकृत व्याकरण' में संगृहीत दोहों के वर्तमान मँजे रूप]।

(१) शार्ङ्गधर पद्धति की भाषा के उदाहरण १४–१७, (२) जैन आचार्य मेरुतुंग एवं उनकी प्रबंधचिंतामणि, १७–२५ [इसमें उद्धृत कविताओं का अनुमित काल, समसामयिक जैन संस्कृति की विशेषताएँ, इसके कुछ शब्द और वाक्य, इनका तुलनात्मक विवेचन], प्रबंध चिंतामणि से उद्धृत दोहे (१–३१ क), २५–५१।

सोमप्रभाचार्य और कुमारपाल प्रतिबोध ५१–५२, इनके अन्य ग्रंथ, ५१–५२, कुमारपाल प्रतिबोध का परिचय, ५२–५३. इसमें संनिविष्ट सामग्री, भाषा का विवेचन ५४–६६, उदाहरणांश, पहला भाग (सोमप्रभ द्वारा उद्धृत प्राचीन कविताएँ १–३६) ६६-७६, दूसरा भाग (सोमप्रभ और सिद्धपाल की रचित कविता ३७-५२) ८०–८७।

(१) माइल्ल धवल के पहले का दोहाग्रंथ 'बृहत् नयचक्र' अथवा 'दव्व सहाव पयास' (दशम शताब्दी में दोहाबद्ध पुरानी हिंदी की कविता) ८७–८६, (२) खड़ी बोली म्लेच्छ भाषा, ८६–६५।

हेमचंद्र का व्याकरण और कुमारपालचरित ६५–१२१, [पाणिनि एवं उनका महान् कृतित्व, ६५–१०७, हेमचंद्र और उनके 'सिद्ध हेमचंद्र शब्दानुशासन' का परिचय, १०७–११०, हेमचंद्रकृत 'देशी नाम-माला, ११०–११४, हेमचंद्र का जीवनचरित तथा काम, ११४–११५, सिद्ध हेम व्याकरण की रचना, ११५-११७, हेमचंद्र और देशी, ११७–१२१], उदाहरणांश, प्रथम भाग (हेमचंद्र की रचना के नमूने) १२२–१२५, द्वितीय भाग (१–१७५), १२६–१७७, परिशिष्ट १७८।